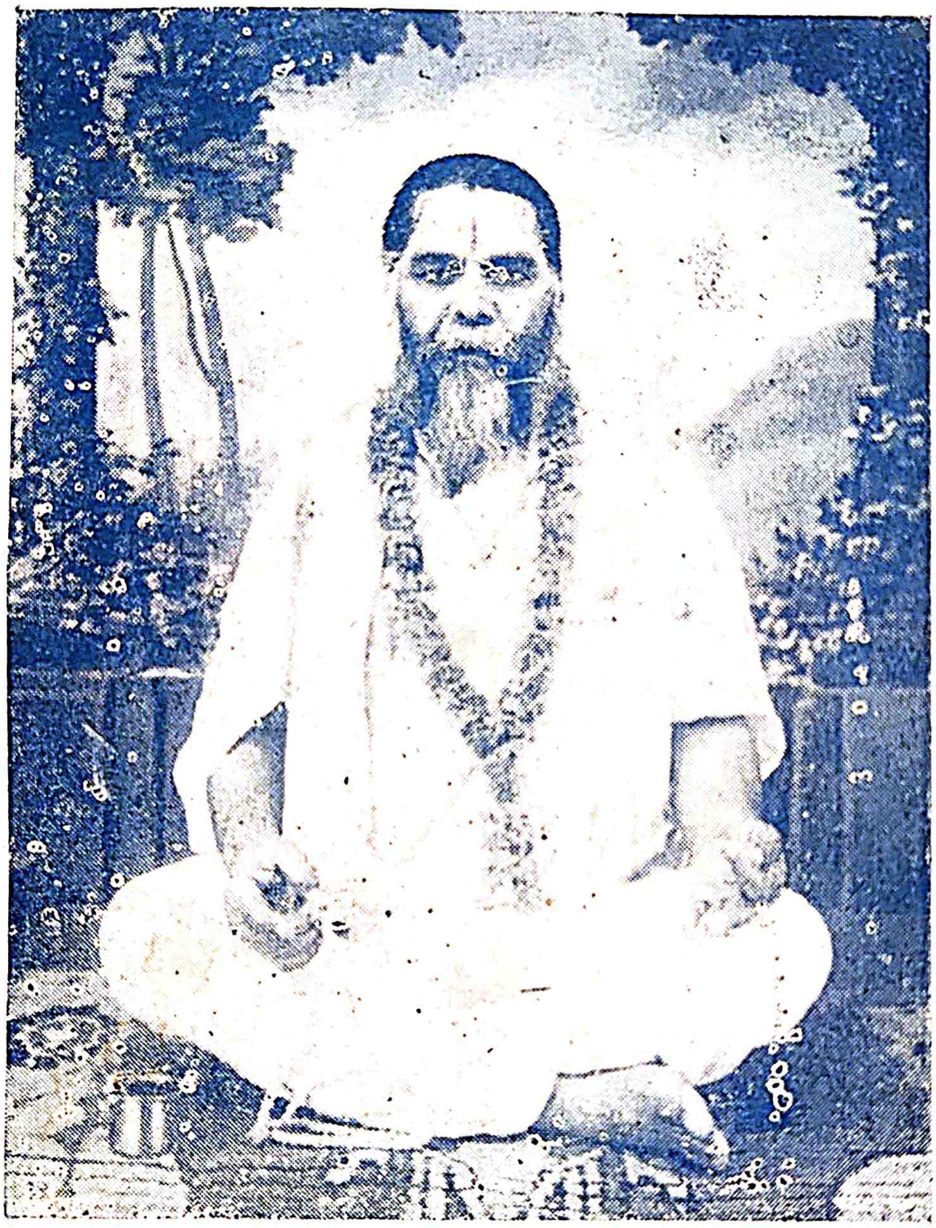

श्रीमहान्त श्रीरामसूरतशरणजी महाराज

श्री सद्गुरु सदन गोलाघाट,

मु० पो०-श्री अयोध्या जी (उत्तर-प्रदेश)

कोष्ठी बांधी धनु

❀ संक्षिप्त जीवन चरित्र ❀

श्रीस्वामीजी महाराज बाराबंकी जिलान्तर्गत तिलोकपुर ग्राम के निवासी थे। इनके पिता श्रीयुत गनेशदत्त जी कान्य कुब्ज ब्राह्मण थे आपकी जातिगत उपाधि दीक्षित थी आप बड़े विद्वान सभी शास्त्रों के ज्ञाता थे श्रीवाल्मीकीय रामायण भागवत आदि की कथा बड़ी रोचकता के साथ कहा करते थे कथा में आप के श्रोता आनन्द विभोर हो जाते थे।

श्रीस्वामीजी के घर का नाम श्रीबलदेव दीक्षित था श्रीस्वामीजी बचपन से ही भगवद्भक्त, कवि, तथा संत सेवी थे आपने पिता माताका अन्त्येष्टि क्रिया अच्छी प्रकार से किया कुछ दिन के बाद आप अयोध्याजी आ गये यहाँ आप हरिभक्तिन माई के यहां रुके और माई जी से अपना विरक्त होने का मनोरथ कह सुनाया माई ने कहा कि जाओ श्रीसरयूजी में स्नान कर आओ आप बड़ी उत्सुकता से श्रीसरयूजी में स्नान करने गये वहां आपने श्रीसरयू मैया से बहुत प्रार्थनाकी कि श्रीसीतारामजी में अनुराग हो फिर आप माई के साथ पूजा की सब सामग्री लेकर श्रीपरम पूज्य अनन्त श्रीपंडितजी महाराज (श्रीजानकीवर शरण जी) श्रीलक्ष्मण किला पर आये, माई ने श्री पंडित जी महाराज से आपका पूरा परिचय दिया और आपका मनोरथ कह सुनाया श्रीपण्डितजी महाराज आपको देखते ही आपके सभी गुप्त चमत्कार मन ही मन समझ गये और अपने निकटवर्ती सन्त से अपनी पूजा वाली डलिया मंगाकर आपको सर्वप्रथम पंच संस्कार से विभूषित किया मस्तक में तिलक, गलेमें युगल कण्ठी बांधी धनुषबाण लगाया, युगल सम्बन्ध की गांठ जोड़ी

और कान में युगल मन्त्रोपदेश किया। आप कृत कृत हो गये दूसरा वैष्णव नाम श्रीरामवल्लभा शरण रखा इस प्रकार आप लक्ष्मण किलामें आनन्दसे रहने लगे। किलाके महंत श्रीरामउदार शरणजी अब बुढ़े हो चले तो आपको अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहे वे आपको इसके बारेमें बहुत समझा बुझा कर कहा लेकिन आप स्वीकार नहीं किए तब वे श्रीमहाराजजी से कहे श्रीमहा-राजजीने जबाब दिया कि वह पक्का साधू है उसके सामने कितने महन्ताधिराज मिलने आयेंगे दूसरे वह अगर मेरा सच्चा चेला होगा तो वह किले की महंती नहीं लेगा श्रीपंडितजी महाराज संबत १९५८ मौनी अमावस्या के दिन श्रीसाकेतपुरी की यात्राकी आप महाराजजी की पुरानी अंचला रख लिये और उसके साथ अष्टसिद्धि नव निधियां जिस सील लोढा से श्रीमहाराजजी के लिये बदाम पीसा जाता था जिस डोरी पर कपड़े सूखते थे सबका अपने संदूकमें बन्दकर रखा जो अभीतक श्रीसद्गुरुसदन में विद्यमान है आप कहते थे कि यह अंचला तथा सब सामान मेरे प्राण है। श्रीरामदेवशरणजी जो आपके साधक शिष्य थे उनसे कहे कि मेरे अन्तिम दिन उसी अंचला में लपेटकर सरयू प्रवाह करना होगा। श्रीमहाराजी के रहने के स्थान नित्य झारते थे सब रज रखते थे। जो जाते समय सात घड़ा भरकर ले गए और उसीसे श्रीसद्गुरु सदनकी दीवाल व नींव डाली गई संवत १९६५में तैय्यार हुआ और चित्रपट श्रीगुरुजी महाराजकी स्थापना हुई ता० ३० अक्तूबर १९३० ई० में एक वसीयत नामा

लिखे जिसमें एक कमेटी का निर्माण किया जिसमें नं०१ श्रीपुरुषोत्तमशरणजी २–श्रीलक्ष्मणशरणजी महाराज जानकीघाट ३–श्रीबाबू किशोरीरमणप्रसादजी रईस पुत्र श्रीगजाधरप्रसादजी उर्फ सिया मोहनीशरण जी काशी निवासी ४–श्री पं० कालिका प्रसादजी मिश्र एडवोकेट ५–बाबू प्रभूदयालशरणजी माथुर बी० एस० सी० ६––श्रीभगवानप्रसादजी भटनागर पोस्ट मास्टर ७–श्रीमिथिलादासजी।

वर्तमान सदस्य श्रीस्वामी महन्त रामसूतशरणजी २–श्रीबाबू किशोरीरमणप्रसादजी ३–रामभगवानशरणजी कानपुर ४–श्रीपं० हरप्रसादजी मैनेजर कनकभवन ५-श्रीहनुमानप्रसादजी भटनागर स्टोनो पी० डब्लू० डी० लखनऊ ६–श्रीबाबू रामकुमारशरणजी अग्रवाल लखनऊ ७-श्रीमायाप्रसादजी गोरखपुर इसके पहले एक वक्फ़ नामा भी लिखकर श्रीसीतारामजीको समस्त चल अचल सम्पत्ति को समर्पित कर दिये।

श्रीअवधमें गो हत्याका बलवा हुआ सन् १९११ई०में पंचकोश के अन्दर गो हत्या करना बन्द था मुसलमानों ने किया लोगों को ज्ञात होने पर सब बिगड़ गये और दोनों तरफ से झगड़ पड़े फिर जब हिन्दू लोग पकड़े जाने लगे तो थानेदारने आपको बलवा का मुखिया साबित किया और जब फैजाबाद जेलमें रखे गये तो गुरु महाराज की कृपा से तीन दिन पर जमानत हुई मुकदमा चला आपको छ वर्ष की सजा हुई जिस दिन आप जेल जा रहे थे उस दिन यह पद बनाकर श्री सिया विहारीशरण को बुलाकर दिया।

मत कहो किसी से बात मरम की प्यारे।
नित मुदा रहो इस दुनियाँ से मन मारे॥
दुर है सराय संसार रहना लघु दिन का।
मत कर गुमान नर तनहिं आस नहीं छिनका॥

मै रावणादि बहु बली गर्व रह्यो जिनको।
ते मिटे मिनट के बीच पता नहीं तिनको॥
याते श्रीगुरु प्रद नाम सु रह्यो सम्भारे।
मत कहो मरम की बात किसी से प्यारे॥

आप जब अपना सजा काटने जा रहे थे यह देखकर अवधमें हाहाकार मच गया आपके प्रेमियों ने हाईकोर्ट में अपील की तो छः मास सजा कम हुई आप बनारस जेल में भेजे गये। आपने जेल में भी अपना कोई नियम नहीं छोड़ा। जब आप हाईकोर्टमें कोशिश करने पर नहीं छूटे तो लोगों ने गवर्नर के पास कोशिश की तब गवर्नर ने कहा जब अयोध्या आयेंगे तब वह एक बार अयोध्या आया और जन्मभूमि में गया वहां का चमत्कार देख कर प्रभावीत हुआ। वह जब लौटा तो जितने लोग जेलमें थे सब को छोड़ देने की आज्ञा दी जब आप जेल से निकले तो काशी नरेश तथा काशी के सभी प्रेमियों ने स्वागत किया आप सबके यहां गये और सबको सुख देकर अयोध्या आये बादमें बहुतदिनों तक अवध वास किया। अपने रहते ही आप स्थानके दूसरे उत्तराधिकारी को चुनकर वैसाख शुक्ल एकादशी के दिन जब श्रीसद्गुरु सदन को आरती होती थी उसी समय आरती के बाद यात्रा की आपकी यात्रा से अयोध्या सूनी हो गयी। सबों को बड़ा दुःख हुआ। बड़े धूमधामसे अयोध्या के सन्तों का भण्डारा हुआ आपका चित्रपट श्रीसियाा सोहाग बाग में पधराया गया।

❀ श्रीगुरुचरण कमलेभ्योनमः ❀

❀ श्रीसीतारामाभ्यांनमः ❀

-: सावन झूला रहस्य :-

श्रीगोस्वामीजी

॥ पद ॥

आली री राघो जी के रुचिर हिंडोरना झूलन जैये। फटिक भीत सुचारु चहुँ दिसि मंजुमणि मैं पौरि ॥ गचकाँच लखि मन नाच सिखि जनु पंचसर रुफ सौर। तोरण वितान पताक चामर ध्वज सुमन फल धौरि ॥ प्रति छांह छवि कवि साखि दै प्रतिसोक है गुर हौर॥१। मदन जैं के खम्भ से रचे खम्भ सरल विसाल पाटीर पाट विचित्र भँवरा वलित वेलन लाल॥ डाँड़ी कनक कुमकुम तिलक रेखैं सुमन सिज भाल। पटली पदिक रतिहृदयें जनुकल धौंति सोमल माल ॥ २ ॥ उन ये सघन घन घोर

मृदु झरि सुखद सावन लाग ॥ वग पांति सुरधनु दमकि दामिन हरित भूमि विभाग। दादुर मुदित भरे सरित सरमहि उमगि जनु अनुराग। पिक मोर मधुप चकोर चातक सोर उपवन वाग ॥ सो समय देखि सोहावनों नव सत संवारि संवारि ॥ गुनरूप जोबन सींव सुन्दरि चली झुण्डन झारि। हिंडोल साल विलोकि सब अंचल पसारि पसारि ॥ लागी असीसन राम सीतहिं सुख समाज निहारि ॥ ३ ॥ झूलहिं झूलावहिं औवसरिन गावहि सो गोंड़ मलार। मंजीर नूपूर वलैधुनि जनु काम करत लतार। अति मचत स्रम कन मुखन विथुरे चिकुर विलुलित हार। तमतड़ित उड़गन अरुण विधु जनु करत व्योम विहार ॥ हिय हरषि वांष प्रसून निरखत विबुध तिय त्रिनतूरि आनन्द जल लोचन मुदित मन पुलकि तन भरि पूरि ॥ सब कहहिं अविचल राजनित कल्यान मंगल

भूरि। चिर जीवो जानकिनाथ जग तुलसी सजीवन मूरि ॥ १ ॥

❀ श्री अग्रअली जू ❀

॥ पद तालरूपक राग देस ॥

झूलत सिया राजिव नैन। रतन जड़ित हिंडोरना सखि रामसुखके ऐन ॥ १ ॥
श्याम अंग पर गौर झलकत दामिनी घन गैन मैथली रघुबीर सोभा निरखि लज्जित मैन॥ २॥
नामपिय को लेहु नागरि जो सखिन मन चैन॥ जानकी नहि लेत मुख सो देत लोचन सैन॥ ३
परसपर झूलत झुलावत वदत मधुरे वैन। अवध पुर नित केलि दम्पति श्रीअग्र आनंद देन॥ ४॥

॥ पद ॥

झूलत रामराजिव नैन। जनकजा सनमुख विराजत तड़ित ज्यों घन गैन ॥ १॥ अतिहिं झूलत मनहिं फूलत रसहिं तोखत मैन॥ लाल

के उर लागि सोभा, सुख की रेखे ऐंन। परसपर अनुराग दोऊ वदत मधुरे वैन। जाल रंध्रनि निरखि बनिता श्रीअग्र उर सुख दैन ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

हिंडोलना में काईं झूलो राज। सिय प्यारी सुकुमारि॥ अगर चनन के खंभ गड़े हैं मलयागिरि के पटा। रेसम डोरि पवन पुरवैया यह सावन की घटा॥ हिंडोरना॥ प्यारी झूलैं लाल झुलावैं भली बनी सजनी। उड़ि उड़ि अचरा परत भुजन पर डरपत ससिबदनी॥ विपिन प्रमोद लता कुञ्जन में श्रीसरयू के तटा। सिय प्यारी के झूलनावै निरखत श्रीअग्र छटा॥

॥ पद ॥

झूलत सीताराम हिंडोरे। श्याम गौर अभिराम मनोहर रतिपति के चित चोरे॥ नील पीतवर बसन लसत तन उठत सुगन्ध झकोरैं। सह-

चरि हरखि झुलावहिं गावहिं छबि निरखत तृन तोरे॥ मन्द मन्द मुस्कावत प्यारे रमकत थोरे थोरे। अति सुकुमारि श्री अग्र कि स्वामिन डरपि गहत पट छोरे ॥ ४ ॥

❀ श्रीकरुनासिन्धुजी ❀

नवल हिंडोरना सखि झूलत दशरथ लाल। गरज घन कोकिला बोलहिं उमगि आनन्द माल ॥ सखा नुज सब नवल सुन्दर कीन्हे नवल सिंगार। झूल नवल हिंडोरना सखि लाज कोटिन मार ॥ पवन मन्द सुगन्ध सीतल नील घन चढ़ि आई। लसत दामिनि झूलते जब जुगल पट फहराइ ॥ सुमन वर्षहिं देव हरषहिं किन्नरी वहु गाइ। श्रीरामचरन समस्त देखहिं अवधपुर जनु धाइ ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

चलो सखी देखन जैये राघो जी रचो है

हिंडोरा। हेम रतन मय रच्यो हिंडोरा हमहूँ झूल झूलैये ॥ चलो ॥ रघुनन्दन छबि जनक नन्दनी निरखि नयन फल पैये। गाउब नाच बजाइ भली विधि स्यामास्याम रिझइये।सावन के अनुहरित सुहावन सुभग सिगार बनैये। यूथ यूथ मिलि चलीहैं सुलोचनि लली लाल-मन भइयै। अति सुन्दर वन बनो हिंडोरा बहु बसन्त छबि छइयै। श्रीरामचरन लखि सिय रघुवर छबि रति पति कोटि लजइयै ॥

॥ पद ॥

हिंडोरे झूलत कौशल चन्द्र।
बाजहिं बाजन मधुर गान धुनि दशों दिशि होत अनन्द। सरयू तीर सुभग शृङ्गार बन ललित परन फल फूलैं। गुरुजहिं भ्रमर मधुर स्वर कोकिल बोलहिं पिय अनुकूलैं। फूलन केर विचित्र हिंडोरा लसत फूल मय डोरी, फूलन के युग खम्भ मनोहर रचि पचि मदन

सचोरी। फूल मुकुट पट लसत राम के फूलन के सिय सारी। नख सिखलौं फूलन के भूषन दम्पति अंग सवाँरी। फूल तरंग उठत सरयू की फूल बरस घन घानी। श्री रामचरन सखि सब शृङ्गार किये गान फूल में बानी।

॥ पद ॥

हिंडोले झूलत सिया रघुनन्द।

चलु री सखी नयन सुख लीजै देखि देखि दोऊ चन्द॥ सावन घन घमण्ड झुकि आये मधुर २ झरि घोरें। मधुर मधुर मृदंग सहनाई नाचहिं बोलहिं मोरें॥ झूलहिं रघुवर जनक नन्दिनी सखी झुलावहिं जोरें। झूलहिं झूलि जाहिं सरयूमें झुकि २ छुवहिं हिलोरें॥ अति सुन्दर बन बनो हिंडोरा संग समाज सब झूलैं। इत उत झुकि झुकि झूलत हिंडोरन मारहिं गेंदन फूलहिं॥ झूलहिं संग झुलावहिं कहु प्रिया मधुर मधुर स्वर गावैं। श्रीराम

चरन नभ सुरतिय नाचहिं गाय सुमन झरिलावैं ॥

❀ श्रीकृपानिवासजी ❀

॥ पद ॥

रंगमानी जु रंगमानी । थारी रमक झूलन सुखदानी॥ श्याम सुन्दर मोरी छतियाँ धड़कै नैनन बरसत पानी ॥ मदन मनोथर उपजत हिय सों पियसों सिय बतरानी। श्रीकृपानिवास रसिक रससानी रघुवर गले लपटानी ॥

॥ पद ॥

धीरा झूलो जी धीरा झूलो । हमारी छतियां धड़क गई हूलो॥वार छूटिगे हार टूटिगे गिरिगे अंग दुकूलो ॥ राम रसिक रस सहज कलीजै नाजुकता समतूलो । श्रीकृपा निवासी कहत छवीली छयल मयाजनि भूलो।

॥ पद ॥

झूलत सिया बल्लभ लाल। लाल कंचन खम्भ सुन्दर जड़ित वेलन लाल ॥ लालभूषण अंग झलकत लसत चीर सुलाल। लालदोऊके वदन सोभा अधर बीरी लाल ॥ लाल सखियाँ लाल गावैं सब झुलावैं लाल। मोर हंस चकोर कोकिल भनत बानीलाल॥ झूलहिं झुलावहिं औसरिन दोऊ परसपर सब वाल ॥ श्रीकृपा-निवास सुलाल जोरी निरखि नैन निहाल ॥३॥

॥ पद ॥

सिया वर झूलत हीय हिंडोल। श्याम रंग दृग वादल छाये नचत मुदित मन मोर॥रसना सखी झुलावहि गावहिं कर लिये स्वांसा डोर। उमगि प्रेम बूंदन बरसावत छवि चमकत चहुँ ओर ॥ छमा दया शीलादि सखी मिल सेवत नित करजोर। श्रीकृपा निवास निरखि यह झूलन नहिं जानत निशि भोर ॥

❁ श्री युगलप्रियाजी ❁

झूलैं श्रीजानकीवल्लभ रंग झूलना हो। रंगमहल बिच कुञ्ज मनोहर अद्भुत सरयू कूलना हो॥ कमला निरतत विमला गावत कोटिन रति समतूलना हो।जै श्रीचन्द कलादि सहचरी श्री युगल प्रिया छवि मूलना हो॥२॥

॥ पद ॥

हिंडोरे कुँअरि कुँअर झूलैं। मेरो हियरा लखि फूलैं। अतिहिं सुघर उपमा न आइ अति बर। भलोहि कहत कवि मति न लहत॥ जहँ चिन्तामणि भूमि द्रुमि रूमि झूमि रहीछबि श्रीसरयू कूलैं॥ अतिहिं सोहाई माई अवध लुगाइ आइ। ताके सम ताको रत रंचक न पाई निज परिकर सम तूलैं। गावैं सो बजावैं अनुराग को बढ़ावैं। राग रागिनी जमावैं प्राण प्राणिनी रिझावैं। लाला चन्द्रकला दिसि

हेरि अति सुख पावैं सिय प्यारी सुख मूलैं ॥ झूला को लगाइ मन जटित प्रवाल भाई। द्रुमन सोहाइ पटुली लगाई सुखदाई रेशम रज भूलैं। श्रीयुगल प्रिय झुलाइ दम्पति रसिक राइ। झोंका दय मुदित मन सुखन समाइ ॥ अनुपम छबि छाई रति काम को लजाई दोउ रसिया दिन दूलैं ॥ १ ॥

॥ पद ॥

हिंडोरे झूलैं श्रीजानकी जान। जुगल प्रकास कुञ्ज कुञ्जन में विपिन प्रमोद लतान श्याम वदन पर जुल्फैं छोड़ैं मन्द मन्द मुस्कान। प्यारी संग समाज अलीगन लेतनई नइ तान ॥ श्रीयुगलप्रिया वारत तन मन धन करत निछावरि प्रान ॥४॥

॥ पद ॥

ललित ललि लाल अलि झूलने झूलहीं।

सरयु सरि तीरमनि महल मोहन मदन मध्य परिकर निकर सुकर रुचि झूलहीं ॥ श्री युगल उत्साह चित चाह पंकज कली सुरितु रवि निरखि हिय हरष फवि फूलहीं । गान तर तान रसखान दशो दिसि श्रवन सुनि सुधुनि युगुम सखि विकी विनु मूलहीं ॥

॥ पद ॥

सबहिं झुलावो री हिंडोरे । अलवेली राज दुलारी । सब सावन तीज सोहावन राजै । विविध भाँतिके भूषण साजे। अंगनप्रति कोटिन छवि लाजैं प्राण करै बलिहारी । सबहिं। कमला विमला चवंर डोलावहि चन्द्रकला सु मृदंग बजावैं । ज्ञानकला कछु तान सुनावैं लाल देत करतारी ॥ सबहिं ॥ सुख समुद्र श्रीजनक दुलारी । रघुनन्दन के प्राण पियारी। श्रीयुगल प्रिया तन मन धन वारी वारी डारी ॥सबहिं॥

❁ बड़े सरकार श्रीहेमलता जी ❁

नेह हिंडोरा डारा दर दिल पटली रीति लगाइ है। खम्भा ख्वाहिस मिलन मोहब्बत मरुवा खूब जसाई है। लट्टू रंगदार लै लालन डोरि जीकर जमाइहै।श्रीयुगल अनन्य हमेसहिं झूलहिं सिया सहित रघुराइ है।

॥ पद ॥

नव नागर नेह नहाये झूलत झूलना हो राज॥ सावन सुमन सुगन्ध सुहावन--अंग--२ मनमथ रति उपजावन। छावन सुछवि बढ़ावन हर दम हेलना होराज॥१॥ रूप अनूप प्रभा चहुँ ओरी दमकि रही दामिनि द्युति गोरी। थोरी वैश किशोरी न कोऊ तिल तूलना हो राज॥२॥ छाई व्योम सघन घन दरशै सुधा सार बूंदन वर बरसै। अग जग जीवन हरखै सरयू कूलना हो राज॥३॥ श्रीयुगल अनन्य

अली कर जोरे छिन-२ नाजुक नाह निहोरे हेरो
नैनन कोरे न कबहू भूलना हो राज ॥४॥

॥ पद ॥

झूलै प्यारी झुलावैं प्यारो ॥ मधुर २ कर कंज मंजु गहि रेशम जु सुकुमारो॥ नैनन निरखि नवल विधु मुख-मन्द हंसनि नृप वारो॥ उरभि रहे अंगअंग रंग रस सुरझिनि अगम निहारो॥ श्रीयुगलअनन्य अली दोउ नेहिन ऊपर सरबस वारो ॥१॥

॥ पद ॥

झूला झूलो विचारि के सुकुमारिन सिसके। हौ सब विधि नागर आगर-वर अडर होत केहि हिसके लीजै लाहु ललित लोनी लखि-रस २ झोकनि मिसके। सिरस सुमनहुँ से नाजुक तन तन तन अनूपम किसके। श्रीयुगल अनन्य अली झूलन विन सब सुख मोदक विसके॥

❀ श्रीप्रीतिलताजी ❀

॥ पद ॥

झलित झल मलित झुकि झूमि दोउ राजहीं। नीरजा तीर श्रीजनकजा संग मिलि धीर रघुबीर हिंडोल सुख साजहीं॥१॥ बजत बर बाजने छाजने मेघ धुनि सोर घनघोर पिक मोर मन गाजहीं। अरुन बर बसन खुश रङ्ग रङ्गीलसे जानकीबर सहित छैल छबि छाजहीं।२

॥ पद ॥

चलोरी चलोरी मोरी संग की सहेली सिय पिय झूलत झुलनमां॥ निरखति बिपुल व्योम सुर बामा हरषित बरषि फुलनमां। सिय मुख ससि पिय नैन चकोरी यह छबि नाहीं भुलनमाँ॥ १ ॥ श्रीचन्द्रकलादि अली अलबेली दुहुँ दिसि हूलत हुलनमाँ। गान तान सखि प्रान सजीवन हिये की हरत सुलनमाँ।२।

सिय सियपिय हंसि दिय गल बहियां पट तर कहुँ न तुलनमाँ श्री प्रीतिलता दोऊ जीवन धन सब सुख के हैं मुलनमाँ ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

झूला झूलो सही मेरे प्रान प्यारसे झोंको ना। जब पिय झोंका देत झमकसे डरतिप्रिया सुकुमारि लाल तुम रोकोना ॥१॥ जस मह-राज कुमार कुंवर तुम अधिक लली सुकुमारि लाल झकझोरो ना ॥२॥ श्रीप्रीतिलता अलि रसिक सिरोमणि बसिया सरजू कूल लाल मुख मोरोना ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

पिया धीरे से झुलावो सुकुमारी प्यारी है। नवसत साज साजे लखि रतिमतिलाजे अङ्ग२ छबि भ्राजे सु डरत भारी है ॥१॥ बहै त्रिविध बयारी नभ घटा घन कारी बर बरस फोहारी फहरत सारी है ॥२॥ सिया स्वामिनी जू मोरी

प्यारे देखो गहि डोरी सखि कहत निहोरी निठुराई धारी है ॥४॥ सुनि जानकी सुबर पिया पायन सु परि श्रीतिलता फूलि करि तन मन वारी है ॥ ५ ॥

❀ श्री युगलविहारिण कृत ❀

जै जै मेरी स्वामिनी, रसिकन प्राणन अधार ।
जै जै मेरी स्वामिनी, रघुनन्दन उर हार ॥
जनम एकही संग भये, रहौं एक ही संग ।
श्रीयुगलविहारिणि लखैं, यह झूलन रहस्य तरंग ॥

॥ पद ॥

आज श्रीसद्गुरु मेरे झूलन प बैठे झूलते । देखि दासोंके हिय पंकज कली से फूलते ॥१॥ रम रसिक श्रीजानकी वर लेत रस रस रसहिं को । देत भक्ति सु प्रेम रस जेहि पाय जन जग भूलते ॥२॥ नेह मेह सु बरसते सुख सरसते साली सु हिय । पद परसते छवि दरसते त्रय ताप जहि निरमूलते ॥३॥ सम दमादि बिज्ञान ध्यान अमानतादिक गुन महान । गंभीर धीर

सु सिंधु पर उपमा न कहुँ कोउ तूलते ॥४॥
बोलनि हँसनि चितवनि चखनि जन मन रखनि रुचि सुचि सदा। चित बसत जुगल बिहारिनी नित स्वामि कबहुँ न भूलते ॥ ५ ॥

॥ पद ॥

झूलैं श्रीसद्गुरु नाम हिंडोरे। खम्भ दम्भ हर प्रीति प्रतीतहिं स्वांस अमोल सुडोरे ॥१॥ मन प्रमोद बन सघन सुहावन तरु अशोक दुति जोरे चिंतन चरित चारु चिद चौकी चमकनि प्रभा अथोरे ॥२॥ अंगन अंग उमंग रंग बहु सरधा सरजु हिलोरे। खट बर बरन हरन पट खटका लटका संत सजोरे॥ ३ ॥ प्रेमा परा आदि अलि अवली झोकैं झुकैं दुहुँ ओरे। श्रीजुगुल बिहारिनि अनुपम झूलनि झूलिय प्रभु दृग मोरे ॥ ४ ॥

॥ पद ॥

बरन बर झूलन झूलैं हो। श्रीसतगुरु

महराज ॥ परिकर गन मन मुदित बिलोकत प्रभु अनुकूले हो ॥ १ ॥ रेफ विन्द आनन्द कंद सद सदन मदन हर सूले हो । जीव पीव सम्बन्ध प्रवर्धक मध्य श्रीगुरु मुद मूले हो ॥२॥ नव षट चारि पुकारि कहत निज उपमा नहिं सम तूले हो । गुरु पद नख रवि निरखि कमल हिय श्रीजुगुल विहारिनि फूले हो ॥ ३ ॥

॥ पद ॥

अपने मैं गुरु को झुलैहौं नव नेह हिंडोर ॥ अपने ॥ रचिहौं बिमल बर भूषन बिमल बर भूषन। पूषन छबि जोर।अपने।सुचि खंभ अदंभ के प्यारे अदंभके प्यारे चित रंगके चोर।अपने। अवध अवधि निरवधि की अवधि निरवधि की भरि नेह सुजोर।अपने।मरुआ अमन मनमानिक अमन मन मानिक सुठि नेह सुडोर।अपने।पटरी सुप्रतीतिकी सुप्रतीति सुप्रीतिकी तेहिबिच गुरु मोर।।अपने।।हिय गगन स्याम घन बरसैं स्याम

घन बरसै नाचै मनमोर। अपने। प्रेमा परा आलि अलि अवलि परा अलि अवली गावैं सुजस अथोर। अपने। श्रीजुगल विहारिनि के प्रभु बिहारिनि के प्रभु भव बन्धन छोर ॥ ८ ॥

॥ पद ॥

श्रीसद्गुरु महाराज कृपा करि झूलन झूलिय जू। हौं अपराध अगाध भरो प्रभु सो सब भूलिय जू। विपुल जन्म बीते भव भरमित अब अनु-कूलिय जू श्रीजुगल विहारिनि निज चेरी हिय प्रीतिलता फूलिय जू।

॥ पद ॥

झूलन बिच विलसत श्रीगुरुदेव। ललित अलाप निरत मधुरे स्वर सुर नर किन्नर सेव। नाना भाँति विभूति भूपावलि चमकत चन्द्र कलेव। रामबल्लभा सरन एक मुख उपमा कहत लजेव ॥

❀ श्रीरसिक अलीजी ❀

॥ पद ॥

प्यारो प्यारी को झुलावैं गावैं रस भरी तान। कनकभवन में कनक हिंडोरा रबि शशि जोति लजावैं॥ चहुँ दिशि ललित वितान बादले झालर झुमकि सुहावैं। इत घन गरजत रिमझिम बरसत मृदु मृदङ्ग धुनि छावैं॥ श्रीरसिक अली प्रिय प्रीतम ऊपर बार बार बलि जावैं॥

॥ पद ॥

झूलत रसिक मणि रघुनन्दन। संग सिय अलबेली नागरी॥ बदन छवि बहु चन्द। रतन जटित हिंडोरना लखि सुर ससि दुति मन्द। रसिक अली अलिगन झुलावत मदन छबि के फन्द॥

॥ पद ॥

जिया परिगै नयन के फेरे में। बसीकरण है जादू टोना मन्द मन्द हँसि हेरे में॥ कछु सो हाल कहि जात बनत नहिं घेर लियो छबि घेरे में। मो मन तकि चलाइ दियो बानन तिरछी तकनि तरेरे में। अब तो सरन सिया नित करिहैं रहब चरन के नेरे में॥

❀ श्रीमधुरअलीजी ❀

॥ पद ॥

रसमाते झूला झूलैं। दोउ सरि सरयू के कूलैं॥श्रीरघुनन्दन जनक नन्दनी इन सम नहि कोऊ तूलैं मणिमय जटित विभूषन सोहै तापर अरुण दुकूलैं। मधुरअली पिय पास झुलावैं लखि दम्पति छबि भूलैं॥

॥ पद ॥

जियरा गइल घबड़ाय मैं तोरे संग न झूलौं

बालम। अतिसैं झोंक झुलावत रसिया॥ वेसर गैल हेराय। श्याम सखे मोरी भीजि गई अंगिया बेनिया दीजै डोलाइ॥ मैं॥

॥ पद ॥

दै गल बाहीं झुलैं दोऊ आज। सरयू तीर तमाल कुञ्जमें जनकलली रघुराज॥ काह कहों कछु कहि न बनत है कोटिन छवि के साज॥ मधुर अली सब तजि संग लगिहौं छोड़ि लोक कुल लाज॥

॥ पद ॥

झोंका दीजै सम्भारिके मोरी सारी न लटके ई सारी मिथिला से आई चांद सुरुज दोऊ भटके। कृपा सखी इनकी चंचलता नयनन में दोउ खटके॥

॥ पद ॥

देखो राम बने जनुसावना। सिया लागीं

रंग वढ़ावना ॥ सियबर की मोतिन की माला सो वगपांति लजावना। इन्द्र धनुष सिंदूर सिया को घन रस को बरसावना । पछिलो पवन सु सन्त विचारो साम घटा प्र घटावना॥। रवि विनु कविबुध मिलिके लागे रसकी झरी लगावना। सिय जू उत्तर दिशि की दामिनि रामस्वरूप लखावना ॥ चमकि झमकि सो निजदासन के अन्तर जोति जगावना। ब्रह्मदेवहुँ यह सावनको करत निरंतर ध्यावना ॥ सिया रामजू जन्म जन्म की जिय की जरनि मिटावना ॥

❀ श्रीशीलमणि कृत ❀

॥ पद ॥

झमकि झुकि झूलत सिया प्यारी। प्यारो । झमकि झमकि झुकि निरखत हसन नेहवारी॥ सावनी सारी मनहारी। हार हवेल गले गजमुक्ता चन्द्रहार धारी। छवीली

छवि सो मतवारी। सीलमनी रघुलाल भाल को भाग लखो भारी।

॥ पद ॥

लिये झूलैं छबीले सुघर धनियाँ। घूघट बीच अनोखी चितवन बदन सरोज कसे तनियाँ। मंद हंसनि मुखचन्द सुधा सर जनकलली रघुकुल मनियाँ। श्रीशीलमणी नवरंग रंगीली जोरी बनी सुखद धनियाँ।

॥ पद ॥

झमकि सब झूलन को निकसीं। पहिरि चीर नवरंग अंग मानो चंपकली विकसी॥ सवन घन गगन घेरि आईं। बहत पवन चपला चमकत चित चतुर चैन छाईं। हरषि हिय गान करैं नारी सुधामुखी सियालाल झुलावैं झूमि झूमि झारी॥

❀ सिया मोहनी ❀

॥ पद ॥

चलो देखैं सिया रघुबीर झुलनवाँ झूलि रहे।

रहि रहि झोंका देत अलींगन उड़त सुरंग रंग चीर। झूलत में अलकैं झुकि झूलत मनहुँ भ्रमर की भीर॥ मन मृग मोहनी को वेधत हैं नयना तीर वे पीर।

॥ पद ॥

आज तो अवध सइयां झमकि झुलाऊँगी। मीठी मीठी तान गाय मन्द मन्द मुसकाय झोकनको मारि हिय सुख न समाऊंगी॥ लट सुरझइहौं उरझैहौं मन आपनो री। कठ सो लगाय हिय तपनि बुझाऊँगी॥ पान को पवइहौं ताको उगिलना पइहौं आली मोहनी वदन लखि सुख न समाऊँगी।

❀ श्रीरसरंगमणिजी ❀

॥ पद ॥

धीरे धीरे झुलावो मेरे बांके बलमा।
झोंका झोंको जनि जोर छला छाके छलमा।

अस कहि सिय डरी लपटानी गरमाँ मानों मिली सुर सरित जमुन जलमाँ ॥ लागी गावन सुहावन सुकंठ कलमा। करैं पवन पिय प्यारी पगे नयना पलमाँ ॥ बसे ऐसे सीता राम जाके हिय थलमा। धन सोई रसरंगमणि भूमि तलमाँ।

॥ पद ॥

सरयू के कूल विरचित झूला झूलत सिया रघुराज आली। रिमझिम रिमझिम बरसत बदरा भीजत सिय सारी पिय चदरा ॥ जलकन मुखन विराज आली। लैकर पट रघुबर पटरानी विहसि परस्पर पोंछत पानी लखि सब सुखी समाज आली ॥ गावैं सखी सुहावन सावन सुनि रसरंगमणि मन भावन अति आनन्दति आज आली ॥

❁ श्रीविश्वनाथजी ❁

॥ पद ॥

झूलत भरि अनुराग हिंडोरे। सिय जी

की भीजति सुरङ्ग चुन्दरी। सुभग राम सिर पाग हिंडोरे गावत राग मलार। परस्पर छबि छहरत बन बाग हिंडोरे। बिश्वनाथ छबि हरपत निरषत सरसत सरस सोहात हिंडोरे ॥

❀ कोविदजी ❀

॥ पद ॥

पिय लखु सावन सु बहरिया। धीर समीर नीर बरसत सत वसि गये सबुज सहरिया ॥ झूला झूलिये भूलिये मति पिय करिये निति कचहरिया। कोविद मोद विनोद महाँ लखु जल थल बहत डहरिया।

॥ पद ॥

यह झूलन प्यारी लागी रे। लाल लली के केलि अनेकन तामें यह अधिकाई लागी रे। कोविद मुदधनि भनि सुमन बरसत सुर पर तनमन वारी ॥

॥ पद ॥

हरी हरी झाँकी निरखो बाँकी अवधलला की रे हारी। थाकी ब्रह्म सभा को, मति गति सकुची सब वसुधा की रामा, हरी हरी चकित चितव सब ओर कोर, नयना की रे हारी ॥ एक बार ही ताकी, ताकी मुक्ति होत जिन ताकी रामा, हरि हरि ऐसी बाँकी आँख मैन समकाकी रे हारी॥ पूरन कर मनसा की हारे खोजि खान उपमा की रामा, हरि हरि मोहि लेत चित चितये, हंसनि लला की रे हारी। मोहनि अली तिहारी चितवनि चाहति परम कृपा की रामा हरि हरि हिय में विहरै मूरति रूप सुधा की रे हारी॥ १ ॥

॥ पद ॥

महल पधारो नयना आलस भरे ॥टेक॥
लोचन फेरि हेरि हंसि नागर, मन मथ पाँव परे,

झमकि चले जनु मदन झूमते, सखियन बाँह धरे, छूटत छवि की छटा अटा चढ़ि, मधुर गान उचरे ॥ बरसत सुमन सुगंध फुहारे, सेज भवन उघरे॥ श्रीकृपा निवास श्रीजानकी बल्लभ, रैन सैन सुढरे ॥

॥ पद ॥

सदा झूलौ मेरे दिलवर बढ़े उत्साह नया।
जिय जुगजुग पिया प्रीतम है यही चाह नया।
लता वितान वन प्रमोद तीर सरयू के।
हिंडोल अति विचित्र मणिन मय तयार नया।
अनेक जंत्र बाजते मृदंग वीणादिक,
अलापती हैं गान कला, सजे साज नया॥
यही है चाह सदा नाथ अलि चकोरिन की,
बैठे झूलन पै दिखाते रहो मुखचन्द नया॥
यही अभिलाष कान्तिलता श्री सिया जू को,
बढ़े दिन दिन सदा सनेह सुख सुहाग नया॥

॥ पद ॥

श्रीसतगुरु के सदनवाँ हो पिय झूलैं झुलनवाँ ॥टेक॥ संग लिये मिथलेश दुलारी, श्रीसरयू के कुलनवाँ हो देव वधू सब नाचहिं गावहिं, हरषत बरसैं फुलनवाँ हो ॥ उपमा खोजि खोजि कविहारे, कतहूँ न मिलत तुल-नवाँ हो श्रीकान्तिलता के जीवन धन दोऊ सब सुख के हैं मुलनवा हो ॥ प्रिय० ॥

॥ पद ॥

करत वियारू श्री युगल विहारी ॥टेक॥ अति छोटि पूरी और कचौरी, साग बने रुचि के अनुहारी ॥ १ ॥ वरफी पेड़ा वेसन लड्डू, घेवर और जलेवी सुढारी ॥ २ ॥ पेठा आम आँवला सुन्दर, वने मुरब्बा अमित अचारी॥३ चटनी स्वाद दार है तीखी, तामें कनक पत्र अधिकारी ॥ ४ ॥ वनी खुहौरी और दनौरी, पापर पपरी हैं रुचिकारी ॥ ५ ॥ टटके बने

मुगौरे सोंधे, गुझिया फेनी अधिक पियारी॥६ दूध गुनगुनो मीठो नीको, चूरन पावत स्वाद विचारी॥ ७ ॥ हास विलास होत सखियन संग, सुख उपजत अति भारी ॥८॥ अंचवायो आलिन ने नीके, अति शीतल सुगंधित वारी ॥६॥ हाथ मलन हित देकर शकर अंचवायो सुगन्धित वारी ॥ १० ॥ वीरी श्रीसीता शरण पवायो, आलिन कृपा आरती उतारी ॥ ११ ॥

॥ पद ॥

तुम सकुचत वस चित चोर हो, दूल्हा रामजी लला। जेवहु व्यञ्जन रुचिर हमारे, व्यङ्ग वचन सुनि मोर हो ॥ दूल्हा ॥ तुम तो काम श्याम छवि लाजत, मात पिता कैसे गोर हो ॥ दूल्हा ॥ गारी ससुरपुर सुनि रघुनन्दन, हंसत सुलखि मोर हो ॥दूल्हा॥ श्रीकृपानिवास हरषि सखि गावैं, जुरि जुरि सिय जू की ओर हो ॥ दूल्हा ॥

॥ पद ॥

आये हो सिय रघुनन्दन लै सखि बृन्दन झूलन चाये। सिर पुहुप मुकुट सुमाल पुहुप सुपुहुप कुण्डल कान है॥ कटि भुज चरन सब पुहुप भूषण कछु न जग उपमान है। सब अलिन अंगन पुहुप अभरन बसन वेस बिराजहीं॥ सिय सजी पुहुप सिंगार राजित रुचिर सखिन समाज हीं। आनन्द छाये॥ १॥ पन्ना पदिक पटुली जड़ित गज मणि महिम मंडल करै। नीलक सुखभदराज वेलन पुहुप राज छटा छरैं॥ भंवरो विभावत मंडित माणिक इन्द्रमणि कलसावली। जरकस वितान निशान झालर मुकुट की झलकावली सरयू तट भाये॥ चहुँ ओर घहरत घोर घन वर्षत सुहरषावन हियो सब ठौर मोर मचाइ शोर सिखनी सुख पूरन कियो। नव विटप वल्ली हरित बरन बिशाल तालन पै लगी। नव दूब इन्द्र बधू विराजहिं

मनहु विधि चूनर रंगी॥ सर भरि आये॥सखी गहे वीण मृदंग मुरज उपंग मंजु बजावहीं। धुरिया सुगोंडहु सुरन मेघ मलार रागन गावहीं॥ सुखकंद झूलत मंद मंद सुचन्द बदन सुहावहीं। कोऊ विजहिं वीजन बाल को रघु-राज चंवर डोलावहीं॥ जन्म फल पाये॥

॥ पद ॥

प्यारी हो आज सखी रंग महल में झूलैं कनक हिंडोरे। चहुँदिशि उमड़ि घुमड़ि घन बर-सत। गाय गाय सावन सखी हरषत मंजुल मोर बन सोरैं। फहरत अरुण बसन छवि छहरत लचकत लंक मचत रसमाचत लागत पवन झकोरैं। श्रीरघुराज सोहावन सावन सरस सनेह सरस सर सावन जनककिशोरी अवध किशोरैं।

॥ पद ॥

झूलैं दोऊ साजन साज हिंडोर। रङ्ग

रहस अनुराग रसीले हंसत हंसावत प्रिय मुख मोर ॥१॥ झोंका देत लली लालन जब प्रीतम रस बस करत निहोर । श्रीप्रीतिलता अनुराग राग सुनि झुलत झुलावत ह्वै गयो भोर ॥२॥

❀ लावनी ❀

श्रीसतगुरु दीन दयालु प्रणत हितकारी ।
बिगरी मम जन्म अनेक की लेहु सँभारी ॥
यह नर तन रतनहिं जात बिना प्रिय नामैं ।
कैसे करि मोको मिलै नाथ अभिरामैं ॥
निरहेतु की कृपाकटाक्ष करिय सुख धामैं ।
चितौं चित हित पद चरित प्रभो वसुयामैं ॥
विरदावलि पतित पुनीत सुदृगन निहारी ।
बिगरी मम जन्म अनेककी लेहु सँभारी॥१॥
त्रिभुवन की सम्पति एक स्वाससम नाहीं ।
सो स्वाँसा श्रीसीताराम नाम बिनु जाहीं ॥
अति विपति हमारी पेखि गहो प्रभु बाहीं ।
शरणागत आरति हरण परण तव आहीं॥

हे अन्तरज्ञ सर्वज्ञ स्वाति सुखकारी ।
विगरी मम जन्म अनेक की लेहु सँभारी॥२॥
जग में ठग सग रे भरे नहीं सग कोई ।
सबही विधि अब हम नैन आपने जोई ॥
यह सुर दुर्लभ तनु पाय हाय वय खोई ।
अब चरण शरण तव आय कहूँ प्रभु रोई ॥
अस कीजै कृपा कृपालु मिलै धनुधारी ।
बिगरी मम जन्मअनेक की लेहु सँभारी ॥३॥
श्रीअवध बास दिय खास राम रजधानी ।
जहँ बाँकी महिमा आप श्रीराम बखानी ॥
अरजी गरजी को श्रवण सुनहु मुददानी ।
सिय नाह मिलन उत्साह चाह जिय जानी॥
है श्री रामबल्लभा शरण भरोसा भारी ।
बिगरी मम जन्म अनेक की लेहु सँभारी॥४॥

॥ पद ॥

जो मेरो अवगुन उर धारो । तौ मिथिलेस नन्दनी स्वामिनि कोटि कलप नहिं मोर उबारो ।

कौन सुक्रिया कौन मैं नाहीं यह संसार असार पनारो ॥ वेद विदित यह विरद तिहारा सीसी सिसकत नाम विचारो । जो ब्रह्माण्ड कोटिको नायक प्रीतम राम स्याम छवि भारो ॥ तौ बस रहत सदा पिय नायक रसिक शिरोमणि छबि मतिवारो ॥ यह जिय देखि पेखि प्रभुता निज नातो मिथिला ओर निहारो। रूप अनूप शील गुण सीमा दासी श्री युगलप्रिया न विसारो ॥

॥ पद ॥

अरुझे दोऊ बसो दृग ऐसे । पै विचमाखन जैसे ॥ नयनन नयन वैन वैनन मिलि सुमन सुगंध सुजैसे। अलिअलियां भलियाँ औसर लहि कलरव करति अभैसे। श्रीचन्द्रकला कलि वीन बजावैं गानकला गावैं लै से । श्रीयुगल प्रिया मृदंग थाप दै जुरी समाज समय से । श्रीहेम-लता श्री प्रीतिलता मिलि प्रिय तमाल तरु तैसे। बैठे सरयू निकुञ्ज लाल ललि गलव-

हियां बरु बैसे। श्रीयुगल विहारिनि लखैं युगलछबि भखैं अकथ मुख कैसे॥

॥ पद ॥

यह दोऊ चन्द बसो उर मेरे। दशरथ सुत श्रीजनक नन्दनी अरुण कमल कर कमलन फेरे। बैठे सघनकुञ्ज सरयूतट आस पास ललना गन घेरे॥ ललित भुजा दिये अंस परसपर झुकि रहि केश कपोलन मेरे। चन्द्रवती सिर चँवर डोलावत चन्द्रकला तन हंस हंस हेरे॥ श्रीराम सखे छवि कहि न परत जब पान पीक मुख झुक झुक गेरे।

॥ पद ॥

देखिके अरुझानो जियरा। रामकुमार स्यामसुन्दर वर हमहिं नहिं सबन को हियरा॥ वन प्रमोद बिच जनकलली संग अली सकल जुरि आईं नियरा। श्रीयुगल प्रिया यह छवि निरखन को हिय बिचवारों सुरति को दियरा॥

॥ पद ॥

बारि दीजै सुरति का दियरा। प्रभा पाय दम्पति छबि सम्पति निरखि हरषि सीतल होइहैं हियरा॥ विद्या प्रसग भक्ति प्रेमादिक कोइ न आवै अविद्या नियरा। श्रीसरयूतट अघट रास रस होय बहार बिहार सिय पियरा॥ श्री सद्गुरु महराज प्रणत हित यह कलिकाल विहालहि कियरा लखि अनुगामि स्वामि निज बालक श्रीयुगलबिहारिनि करू हिय सियरा।

❀ आरती ❀

सजन लागी आरती मृगनयनी। कंचन थार कपूर की बाती गंध सुमन हर लैनी। करहिं आरती छवि अविलोकहिं गान करैं पिक वैनी। चँवर छत्र सिर विजन ढुरावति सहचरिया सुख ऐनी॥ जल झारी सुचि पान डबन भरि सगं सुगन्ध सुखदेनी। सुख सोवहु अब सयन समय भयो मृग मुसकाय दई सैनी। हरषि

निरषि छवि पर तृण तोरत मौन सुधारस ऐनी ।

॥ पद ॥

जय श्रीजानकि वल्लभलाल । मणि मंदिर श्रीकनक भवन में विपुल रंगीली वाल ॥ कोई गावत कोई बीन बजावत कोई मृदंग करताल। श्रीयुगल प्रिया रिझवत दोऊ लालन छवि लखि भई सो निहाल ॥

॥ पद ॥

सुन्दर बदन विलोकि कै नयनन फल लीजै । जानकि बल्लभ लाल की सखि आरत कीजै । सुन्दर ललित कपोल पै झुकि अलकि विराजै । कंठे कंठ सुहावना गज मुक्ता राजै । पाग बने जरतार के डुपटा जरतारी ॥ पटुका है पचरंग की मणि जटित किनारी । सिय जू की सोहै लाल चूनरी छवि अधिक विराजै । रसिक अली की स्वामिनि भूषण छवि छाजै ।

॥ पद ॥

सिया सिय वल्लभलाल की सखि आरति करिये। दम्पति छवि अवलोकि कै हिय नयनन धरिये अंग अनूप सुहावने पट भूषण राजै॥ नेह भरे दोऊ रसिक सुभग सिंहासन राजै। मंद मन्द मुसकाय कै सिय गल भुज धारे। ललकि लई उर लाय प्राण प्रीतम निज प्यारे। चँवर छत्र कोऊ लिये बाजने विपुल बजावैं। श्रीप्रेमलता उर उमगि सुमन नचि नचि बरसावैं॥

॥ पद ॥

अब हमारे प्राण प्रीतम प्यारे अलसाने लगे। छिनहिं छिन अंगड़ाइयाँ लै लै के जमुहाने लगे। चञ्चलाहट हट गई उत्पन्न भोलापन हुआ। नींद से माते नयन नभकञ्ज सकुचाने लगे॥ रैनहू बीती बहुत नभ मध्य उड़गन आ गये। गीतराग विहागभी गायक गुणी गाने लगे॥ दूसरी नौबत बजी घड़ियाल जन दीनो

गजल। पांहरू आये अपर पहरे को बदलाने लगे। लै चलो हरिजन उठाके प्यारे को सुख सेज पर सैन छवि निरखन को अब मम नयन ललचाने लगे॥

❀ बधाई ❀

सब मिलि आवोरी साजनी मंगल गाइये। माई सुखदेई के भए सुत वेगि बधावा जाइये॥ आज कैसो दिवस सजनी बड़े भाग न पाइये। घिसि चारु चंदन मीपि आँगन मोतिन चौक पुराइये॥ सात सींक संवारि सथियाँ वन्दनवार बँधाइये। ललन मुख लखि लेऊं वलैय्या नैनन हियो सिराइये॥ प्राण सर्वस वारने करि फूली अंग न माइये। हिय हुती सो दृगन देखी भयो सबन्हि मन भाइये॥ हित अनूप हमार जीवन विधना तूँ चिरजाइये।

(२)

सखियाँ सकल मिलि गावो बधाई आज। पन्डित गणेश घर जनमेउ सुवन आज॥

चौथे पने हरि गुरू की सु आशीस पाइ सुफल भयो मंजु जन्म राम सोहों भयोउ आज।

(सोहर ३)

सद्गुरु जनम बधाई मनोहर गावौं मनोहर गावौं हो। ललना बाणी परम सुचि होइ जनम फल पावौं हो। पन्डित दत्त गणेश पिता यश पायो पिता यश पायो हो। ललना मातु श्री सुख देई सुभग सुत जायउ हो। फागुन सित तिथि तीज सोम दिन प्रातहि सोम दिन प्रातहि हो। ललना जनमें हैं सदगुरु नारि सुमंगल गावहि हो। मंगल विविध बधाई सु आसिनि आवई सुआसिनि आवई हो। ललना गाइ सोहिलो वस्त्र आभूषण पावइ हो। अनुपम बालक देखि हरषि तृण तोरैं हरषि तृण तोरैं हो। ललना अंचर पसारि असीसहिं ईश निहोरहिं हो। नाम प्रथम बलदेव बुद्धि गुन सागर बुद्धि गुन सागर हो ललना गुरु पद रामवल्लभा शरण उजागर हो। सद्गुरु सदन

बनाइ जगत हित किन्हेउ जगत हित किन्हेउ हो। ललना बहु शिष्यन अपनाइ विमल यश दीन्हेउ हो। मंजु समय पद रचहिं औ गाइ सुनावहिं गाइ सुनावहिं हो। ललना युगल बिहार बहार ग्रंथ छबि राजहिं हो।

(४)

आज रसीली बजत बधाई।
वर्ष गांठि श्रीसद्गुरु जी की निरखहु उमंग बढ़ाई॥ सद्गुरु सदन जुरे सब गायक गावहिं हिया हुलसाई। चहुँदिसि वन्दनवार विराजहि मंगल साज सजाई॥ उड़हिं अबीर अरगजा छिरकहिं उर आनन्द अधिकाई। मंजु निछावरि बँटत विविध विध वसन द्रव्य मन भाई॥

(५)

आज सुमंगल साज चहूँ दिसि पुर तिलोक सरसाई। पितु गणेशके सुकृत कलपतरु फेरउ सुवन सुखदाई॥ बाल सुलच्छण देखि सुपरि-

जन अरु पुरजन हरषाई। श्रीसुखदेईकी कोखि सराहत उमगि सुमन झरिलाई ॥ फागुन सित पाख तीज सोम दिन प्रातकाल सुभदाई। जात कर्म नाँदी मुख विधिवत उपरोहित कर-वाई ॥ उड़इ अबीर अरगजा छिरकहिं बाजन विपुल बजाई। मंजु निछावरि देत वसन बहु द्रव्य पिता हुलसाई ॥

(६)

बाजै बाजै रसीली बधाइयाँ।

पुर तिलोक पन्डित गणेश घर आई सुहागिन लुगाइयाँ॥ मङ्गल साज लिये सब आवहिं दधि दुर्वादि सजाइयाँ। अनुपम बालक लखि तृण तोरैं हरिसे मनावें भलाइयां॥ मंजु मुदितपितु करत निछावरि भूषन वसन लुटाइयाँ।

(७)

आज सुफागुन मास पाख सित तीज सुमङ्गल दाई। सद्‌गुरु जनम दिवस शुभ अव-

सर सद्गुरु सदन बधाई॥ जुरे साधुगण शिष्य सुसेवक अरु गायक समुदाई। बाजहिं झाल मृदंग वीन अरुगावहि गीति सुहाई॥ विविध भाँति गति ताल दिखावहिं नागर नट हुल-साई। दधि दुर्वा रोचन दल फल युत चलि सखि थार सजाई॥

(८)

अवध प्रान्त महँ बाराबंकी तहँ तिलोक पुर वासी। पितु गणेश दीक्षित घर जनमेउ सुवन सुलच्छन रासी॥ समाचार सुनि परि-जन पुरजन मङ्गल सजि महुलासी। आइ गाइ छबि प्रमुदित छिन छिन लखहिं सुवन सुख-रासी॥ आनन्द मगन मातु सुखदेई लालनि प्रेम पियासी। वारि निछावरि देति असीसहिं पाइ विविध धन रासी॥ नाम करन आदिक विधान करि सुत निहारि गुन रासी। मंजु मनाइ देव पितु याचहिं सुतहरि भगति बिलासी

(९)

आज चलो सखि मिलि तिलोक पुर बाजति रुचिर बधाई। पितु गणेश दीक्षित ग्रह मङ्गल भयो सुवन सुखदाई ॥ सजि नवसप्त सखी जुरि आईं लखि सुत छबि हरषाई। सुवन सुलक्षण देखि सराहहिं उर आनन्द न अमाई॥ धनि धनि कोखि मातु सुखदेई कहहिं असीसहिं आई। नाचहिं गावहिं मोद बढ़ावहिं पितु बहु हार लुटाई। नाऊ बारी लेहिं निछावरि मुदित असीसत जाई। मंजु हरषि हिय फिरहिं सराहत पितु सुभाग्य बहुताई ॥

(१०)

आजु सुफागुन मास पाख सित तीज सुलच्छन ऐनी। पुर तिलोक दीक्षित गणेश गृह सुवन भयो गुण श्रेनी। मातु सुभागवती सुखदेई विविध निछावरि दीनी। जुरीं सकल नव सप्त साजि सखि गान करहिं रसलीनी विविध ताल गति नाचहिं गावहिं मंजु सकल रस दीनी ॥

(११)

आजु सु सद्गुरु सदन लखो चलि मंगलगान गाहाई। सद्गुरु जनम दिवस फागुन सित तीज परम सुखदाई॥ जुरे सकल गायक सु साधुगण गावहि गुन हरषाई। उड़हिं अबीर अरगजा छिरकहिं विबुध सुमन झरिलाई॥ विविध निछावरि देहिं लेहिं मिलि विविध प्रसादी आई। मंजु मुदित मन गाइ सुनावहिं आनन्द हिय हुलसाई॥

(१२)

बधाई गह गही बाजै मनों सावन के घन गाजैं। सजो तुलसी दधी दुर्वा सुलोचन फूल फल सर्वा॥ सुमंगल साजि लै आवें दिखावें हीय हुलसावें। चलो मिलि श्रीसद्गुरु सदने लखैं गावें सुपद अपने॥ सुने सद्गुरु हिये हुलसैं सुफल जीवन हमें वकसैं। गुनी गायक वहाँ हैं ही बधाई गाईहैं सब ही॥ गान सुनि

सुनि सुमन बरसैं निछावरि दै दिये हुलसैं ॥ सरस हरि भगति वर पावैं मंजु रमि सोहिलो गावैं ॥

(१३)

चलो सखि सोहिलो गावैं सबहि मिलि मोद उपजावैं । लसै छबि धूप धूमन की मनो घटा स्याम मेघन की ॥ सुमन भयो भवन दिच्छित के बधाई हो रही जमके ॥ दुआरे नौबतें बाजैं मनो सावन के घन गाजैं । सु मंगल साजि सखि आवैं सबहिं मिलि सोहिलो गावैं ॥ सुवन लच्छण लखै जाई सराहैं कोखि सुखदेई । लला की बाल छबि निरखैं सुपट धन वारि मन हरषैं ॥ मनावैं देव अरु देवी मंजु हो बाल चिरजीवी ॥

❀ श्रीं नमोगुरुभ्यः ❀

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई ।
तदपि कहे बिनु रहा न कोई ॥

❀ गजल ❀

सिया झूलन की छबि जोरी मुबारक हो मुबारक हो। बाँधे सखि प्रेम की डोरी मुबारक हो मुबारक हो ॥ १ ॥ लला घनश्याम के माहीं सिया दामिनि सी दमकाहीं। यह पटतर जोग जग नाहीं मुबारक हो मुबारक हो ॥ २ ॥ सो तोरे राम छन माहीं सिया जैमाल गर डारीं। नृपति प्रण राखि रंगवारी मुबारक हो मुबारक हो ॥३॥ सु कहती मोद लतिकारीं लगे नाता ये सुखदाता। सियावर मान लें मेरी मुबारक हो मुबारक हो ॥ ४ ॥

आज महाराज का दरबार मुबारक होवे।
हम सभा की जहे किस्मत मुबारक होवे ॥

मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, श्रीअयोध्याजी।